श्रीजानकी रमण चरण कमलेभ्योनमः

श्रीस्वामि रामस्वरूपजी परमहंस कृत

पद कुसुमावली।

जिसमें

श्रीरघुनन्दन भक्त चित्तचन्दन जनमनरंजन
वो जगजननी बिश्व मुद भरनी श्रीजनक-
नन्दनीजू की षटऋतु बिहार अनेक
पद कुसुम प्रेम मकरन्द भरित
सुशोभित है।

जिसको

श्रीअयोध्यापुरी बाबा मणिराम छावनी के चतुर्थ
गादीस्थ श्री १०८ महान्त रामशोभादासजी
महाराज के लघु कृपापात्र रामबिलास-
दास ने भावुक जनोंके चित्त बिनो-
दार्थ अति परिश्रम से छपवाकर
प्रकाशित किया।

मैनेजर गोकुलप्रसाद द्वारा,
गोकुल प्रेस शृंगारहाट श्रीअयोध्याजी में मुद्रित।

प्रथमबार २५०] सं० १९८० [मूल्य प्रेम

* श्रीजानकी रमण चरण कमलेभ्योनमः *

अथ पद कुसुमावली प्रारम्भः ॥

मंगलाचरण दोहा ।

बन्दौं श्रीगुरु पद्मपद, भव भय हरनि गलानि ।
कृपादृष्टि जन पर करहु, चित लिखनी पर ठानि ॥
श्यामगौर सब गुण सदन, हरन मदन चितचोर ।
लखि प्रणाम करियहिं कृपा, दृग रसाल की कोर ॥
वन्दौं युगल समाज अब, सुनि बिनती मोहि ताक ।
तुम सबके अभिमान ते, धारहुं हाथ पताक ॥
रस शिंगार वर तेग पर, नचन चहत हौं धाइ ।
रसिक जनन के चित हरन, रसिकलाल छबिगाइ ॥
ताते बाहूं गहि चलौ, चूकि जाय नहिं पेर ।
जमक छमक निरखत रहहुँ, ताल ताल पर हेर ॥
सत उनइस सुन्दर परम, तेरासी के साल ।
रचि रुचि पद कुसुमावली, पहिरइहों रघुलाल ॥
जयति चारुशीले सखी, जै शुभगे महरानि ।
भूल होय जो गुहन में, मातु बतावहु आनि ॥
अति उत्तम मधुमास में, राम जन्म शिरमोर ।
रम्भ करौ पद लिखन को, रामरूप रस बोर ॥

गजल कौवाली ॥१॥

जानकीरमन प्राणप्यारे, मनावों तिहुँपुर उजियारे ।।टेक।।
दो० शुभग शीश पर क्रीट औ, कुंडल छटा बिशाल।
शरद चंद्र मोहत बदन, नैना जादू जाल ।।
रशीली चितवनि हँसि मारे ।।१।।
दो० पीतरंग पटुका लसे, उर आयत रघुबीर ।
मणिन माल जगमग करैं, सुन्दर श्याम शरीर ।।
कमल कर धनुष बाण धारे ।।२।।
दो० नाभी जमुना भ्रमर की, त्रिवली हरैं तरंग ।
धोती दामिनि बरण कटि, रीझत कोटि अनंग ।।
रहैं नहिं तन मन सुधि सारे ।।३।।
दो० दुति लावणता रूप की, बरणत ओर न छोर।
तुम घन शम सरूप जन, मैं नाचों बनि मोर ।।
होहु जनि अंखियन ते न्यारे ।।४।।

गजल नया ॥२॥

हे रामकुमार किशोरपिया, दिलदार मुझे तरसानानहीं।टेक
तव सुन्दर रूप अनूपछटा, मुख आसिन चन्द्र निहार हटा।
रस बरसनमें घनश्यामघटा, दृगतार मुझे ललचाना नहीं।।
अब प्रीतम प्रीत लगाइ भली, सरजूतट लाल रसाल गली।
हिय भीतर विकसीप्रेमकली, कर प्यार मुझेतलफानानहीं।।
सब गावत कानकरो मनमें सुख सिन्धु तूम्हीं सब भ्रातनमें।
ताते नहिं मीठी बातन में, गलहार मुझे भर जाना नहीं ।।

कह राम सरूप अली प्यारे, हमसे नहिं होहु कभी न्यारे।
चितवनमें जान कतलकारे, दृगमार मुझे तज जानानहीं ॥

तथा ॥३॥

हे राम तुम्हारा रूप मुझे मन का आनन्द ठिकाना है।टेक
शिररत्न अनूपम क्रीट धरा, कल कुन्डल कान बरणमकरा।
मुख चन्द्र मनोहर हांस भरा, सब हिय की ताप मिटाना है॥
मणिमाल सुहावन कंधर हैं, कटि श्यामल अंग पिताम्बरहै।
जनुशोभा के रम अम्बर है, जहँतकि विनुमोल विकानाहै॥
कह रामसरूप सिंहासन में, सरजू तट सुंदर बागन में।
तुमसंग सुकूंज निकूंजन में, चित आठोयाम टिकाना है॥

श्रीरामजन्मबधाई (चैती) ॥४॥

राज भवन मा उतसव जनम पिया का हो रामा ॥टेक॥दासन सर्व सखन सुखका मग, जल श्रृंगार विया का हो रामा॥ १ ॥ बालरूप सुधि करन करावन, शीतल मातु हिया का हो रामा ॥ २ ॥ किलकनि चलनि पद्मपद चालनि, मंगल अमर तियाका हो रामा ॥३॥ रामसरूप अली मिथिलाते, ललकन प्रेम सिया का हो रामा॥ ४ ॥

गजल कौवाली ॥५॥

खिलत चहुं लाल आंगनमें, सुहावन देखि मन भावैं।।टेक।।
लगत मुखचन्द्र छबि प्यारे, चटोरे कर कमल धारे।
छमकि कटि किंकिणीं न्यारे, कुलक जब मातु उर आवैं॥
बजैं पद नूपुरें छुन छुन, चलैं पी दुध करि ठुन ठुन।

दुलारैं लाइ उर पुन पुन, हलावैं बाल गुण गावैं ॥
चलैं सब देव तिय दरसैं, निरखि छबि पद्म पद परसैं।
हरखि उर फुल नचि बरसैं, सोहिलो बोल सिर नावैं ॥
भले लखि रूप अति हरसैं, सरूपानंद मन करसैं।
जिन्हे त्रैलोक भी तरसैं, सदा सो नयन मन भावैं ॥

पद ॥६॥

आज मैं बधाई जैहौं राजकुँमर की ॥ टेक ॥ लै रस बीन मृदंग झाँझ सुर, आज मैं थिरिक लेहौं, ताल घुमर की ॥ १ ॥ एकते एक गान गति में सब. संग में सहेली लेहौं रूप सुघर की ॥ २ ॥ नचि हौं मटक मटकि आँगन में, हरिहौं मति गंधर्ब तुमर की॥ ३ ॥ रामसरूप श्याम तनु लखि लखि, उर धरि एहौं छबि बाल उमर की ॥ ४ ॥

दादरा ॥७॥

झुलाय रहीं मइया धीरे धीरे ॥ टेक ॥ कंचन खंभ पालना मनिमय. चहुं किंकिणि झनकइया ॥ १ ॥ झुला० ॥ तोरहिं ताल मृदंग सखी गण, गति बीणन सहनइया ॥ झुला० ॥ २ ॥ मुख मुसकाइ करत पद पंकज, उर आनद बरसइया ॥झुला० ॥ ३ ॥ रामसरूप बिसारत तन मन, तकि बांकी कुलकइया ॥ झुला० ॥ ४ ॥

श्रीजानकी जन्म बधाई [गजल कौवाली] ॥८॥

सखी चलु सोहिलो गावैं, सुनयना बालकी जाई ॥ टेक ॥ सुघर दुति दामिनी छीनैं, हरति दृग पद्म मृग मीनैं. किलकि लखि मातु रस भीनैं, बदन बहु चन्द्र छबि छाई ॥ १ ॥ करन मणि दुधिआं राजैं, कटी नग नील लर भ्राजैं, पगन दोउ पैंगिआं बाजैं, श्रुतिन मुख ताल जनु लाई ॥ २ ॥ टिकुलिया माथ मृग मदकी, झिंगुलिया अनुहरन रंग की, रुआईं मति हरन जग की, सुनत जेहि तृप्ति नहि आई ॥ ३ ॥ यह छबि लखि आरती करिये, सरूपा उर मुदित धरिए सरन इनके सदा परिए, जो हैं रघुलाल सुखदाई ॥ ४ ॥

दादरा ॥९॥

खेलति मोरी लाड़िली सुखरासी ॥ टेक ॥
उचकति तात मातु गोदी में, किलकति तोतरि भासी ॥
जिन सेवा की चाह करहिं नित, उमा रमा बनिदासी ॥
रामसरूप सदा दरशन को, तरसत अवध बिलासी ॥

अथोथापन मंगल चैती ॥१०॥

पिय जागन को बाजी है बीण सकारे हो रामा ॥ टेक ॥ उठि उठि साज संभारी सखीं सब, ताल मृदंग टकारे हो रामा ॥ १ ॥ कोयल कीर चकोर मोर सब, सारस नाम पुकारे हो रामा ॥ २ ॥ धरि कर कान गुणी द्वारन पर, भैरौं राग हंकारे हो रामा ॥ ३ ॥

रामसरूप जोरि कर बिनवत, जागहु प्राण हमारे हो रामा ॥ ४ ॥

दादरा ॥११॥

बीणा बाजो महल में चलो प्यारी ॥ टेक ॥
छाहो राग रागिनी हिलमिल, ताथेई ताल पगन धारी।
करतीं गान अलीं जातीं सब, मंगल भोग सजे थारी ॥
जहँ बैठे ललि लाल पलंग पर, मृदुमुसक्यान कतलकारी।
रामसरूप निहारि युगल मुख, रीझत नैन मैनहारी ॥

चैती ॥१२॥

राजकुँवर ते लागे हैं नैना हमारे हो रामा ॥ टेक ॥ पीत बसन सिर क्रीट मनोहर, सुन्दर श्याम पिआरे हो रामा ॥ १ ॥ जब उठि चलत बजत कटि किंकिणिं, मानहुँ मदन सितारे हो रामा ॥२॥ रामसरूप अली कल नाहीं, विन रघुलाल निहारे हो रामा ॥ ३ ॥

तथा ॥१३॥

तोरे ढूढ़न मा अब मैं भइली दिवानी हो रामा ॥ टेक ॥ भूषन भोग और नाना सुख, छूट गई कुलकानी हो रामा ॥ १ ॥ श्यामल अंग पीत पट कटि लख, शशि मुख मति अरुझानी हो रामा ॥ २ ॥ सुन २ बोल अमोल सुधा मै, अद्भुत हांस लुभानी हो रामा॥ ३ ॥ रामसरूप रसिक मग तीक्षन, नहिं श्रींगार कहानी हो रामा ॥ ४ ॥

फुलबंगला के पद ॥१४॥

राजत आज युगल फुल बंगला॥ टेक॥ फुलन केर चन्द्रिका सिय सिर, फुलन क्रीट मुकट सजे अमला॥ फुलन के औरो सब भूषण फुलन बसन कसे पिय समला॥१॥ फुलन चंवर फुल सिंहासन फुलन छत्र कलिन सब जंगला। फुलन के चहुं यंत्र झरत जल फुलन की झालर मणि कमला॥२॥ फुलन में चहुँओर कदम द्रुम फुलन थाल रचित सब गमला॥ फुलन भृंग कीर कोयल धुनि कुंहकत मंजु मधुर सुर मुरला॥ ३॥ रामसरूप फुलहिन सो सजि शोभित सब नवला॥ चारुशीला सखी चन्द्रकला दोउ भरहि अलाप वीण सखी बिमला॥ ४॥

अथ झूला के पद ॥१५॥

राज महल में सजो हिंडोरा, झूलत राघवचंद आली॥ टेक॥
बृन्द २ सखिआं संग लीन्हे, तोरहि ताल मृदंगन झीने।
उघटहिं कोटिन छंद आली॥ १॥
मधुर मधुर घनकी सुनिसोरा, बून्दन झरि नाचत चहुंमोरा।
कूंकत जालन रंद आली॥ २॥
झोका देहिं अलीं हटि सुघरी, मनहु झुकै कंचन की पुतरी।
हँसि प्रिय प्रीतम मंद आली॥ ३॥

रामसरूपकहौंकाबतिआ, लखिछबिश्यामजुड़ानीछतिया॥
भरि भरि उर सुख कंद आली ॥ ४ ॥

ठुमरी ॥१६॥

आज झुलत हिंडोरा प्यारे जानकी रमन, हँसि झोका झोकत मनको हरन। टेक। घन धुनि नाचत मोर मुरइया, पिय पिय पिय पिय रटत पपइया, रिम झिम बरसत डोलत पवन ॥ १ ॥ महि पग पैंग बढ़ावत फिर फिर, लागि झकोर खुलत प्यारी शिर, पिय चीर उढ़ावहिं रचित रतन ॥ २ ॥ निरखहिं चन्द्र बदन सब सखियां, गाइ बजाइ राग रागिनियां, सुन सुर बरषत नभ ते सुमन ॥ ३ ॥ रामसरूप अली धरि धीरा घूंघट खोल खवायउ बीरा, भार डार कुल कानि करन ॥४॥

कजली ॥१७॥

झूला झूलत राज ललनवां, मोरा जिया ललचनवां ना ॥ टेक ॥ कुंधवा लपकत बुन्दवा टपकत, मधुर पवनवां ना ॥१॥ बाल सखा सब झमकि झुलावत, रूप सलोनवां ना ॥२॥ रामसरूप निछावर बारत, कोटि मदनवां ना ॥३॥

तथा ॥१८॥

झूला झूलत मा मनकरषैं प्यारी प्राण पियारे ना॥ टेक
श्यामगौर दय २ गलबइयां, भरत पैंग महि धरि २पइयां,
डोरी धारे धारे ना ॥१॥
क्रीट चंद्रिका कंठा गलभर, कीर्णवली छटकति सिय उरपर,

ताकि दृग मारे मारे ना ॥ २ ॥

वागा घूम घूमर अति फहरत, लहँगा लहर २ अति लहरत।

कचफल कारे कारे ना ॥३॥

रामसरूप वीण स्वर जोरत, खग मृग जीव जन्तु रस बोरत।

सब चित हारे हारे ना ॥ ४ ॥

तथा ॥१९॥

झूला झूलन दे बालमवां हमका धीरे पैंग सुहाति ॥टेक॥

तुम तो लाल डरत हौ नाहीं, मम मति अति डर पाति।१।

भूषण पट अरुझात परस्पर, वेणी लट फहराति ॥ २ ॥

देत झकोर पवन पुरवइया, घन दामिनि घहराति ॥३॥

रामसरूप अली बस प्रीतम, जनक लली झगराति ॥४॥

दादरो ॥२०॥

झूला झूलत लाल सिया संग में ॥टेक॥ रेखता मूंगोकी चारू पटुली रेशमकी डोरमें, पोहे अनूप मोती चहुंओर कोर में, वांकी लेत झकोर दुहुं पँग में ॥ १ ॥ सोहैं अनेक सखियां बीणादि को लिये, गावैं मृदंग गति में रस प्रेम को पिये, दोउ हरषत हरे भरे रँगमें।२॥ चहुंओर द्रुम लतायें छाईं हरी हरी, मेघो अवाज मोरा कुंहुंकै घरी घरी, बाजू पट फहरात पिया अँग में ॥ ३ ॥ मन सिज अनेक मोहैं प्यारे क अंग में, मन रामरूप बसगा दिलदार संगमें, अब लूटब सब सुख ता लँग में ॥४॥

तथा ॥ २१ ॥

दोनों झूलत आज सुभाग भरे ॥ टेक ॥ रेखता ॥ इत चन्द्रिका मन मोहे उत क्रीट की छटा, इत दामिनि दिल करषे, उत मेघ की घटा, नीके उमगत हँसि दै बाँहि गरे ॥ १ ॥ भूषण अनेक मणिमय पोशाक हरीली, सब अंग २ शोभा रसराज रंगीली, वांके नख सिख चेटक रूप धरे ॥ २ ॥ चहुंओर सखिन मंडल मन मोद को भरें, भरि कै मलार रागिन कल कंठ को हरें, चहुं मृदु मुसकाय कटाक्ष करे ॥ ३ ॥ भजु राम रूप चरणों या युगल रूपपर, पाई न कोइ उपमा जग खोज खोज कर, लाखि रति पति कोटि गलानि गरे ॥ ४ ॥

पद ॥२२॥

झूलत युगल करि करि रंग ॥ टेक ॥
रतन महि पद पद्म धुनकत करत चंचल अंग।
मटकि मिलि गावत मधुर सुर मेघ राग षडंग ॥ १ ॥
पैंग मधि हँसि हँसि झकोरत लपिट छोड़त संग।
मनहु सावन जीति वे हित करत रति पति जंग ॥ २ ॥
रामसरूप अनूप मुख लखि नचत ताल मृदंग।
वल्लिका भुज फेर मोरत मनहुं खेलि पतंग ॥ ३ ॥

पद दूसरा तर्ज ॥२३॥

झूलनि आज लखौरी लालन की ॥ टेक ॥
छटकत क्रीट पांति मोतिन सिर, घालन नयन सयन

भालनकी ॥ १ ॥ अधरन केलि करत नासा मणि, परत कपोल झलक बालन की ॥ २ ॥ गहि गहि डोर झमकि हँसि झोकत नूपुर छमक बिबिध तालन की ॥ ३ ॥ रामसरूप गान पिय को सुन, सुध बुध गई सिया बालन की ॥ ४ ॥

राग मलार ॥२४॥

दोनों झूलत हिंडोरे प्रेम भरे, हँसि हँसि दै अँसन बाँहि धरे ॥ टेक ॥ मृदुमुसकाइ हरे हेर झोकत सुन्दर ताल परे। बरषत सावन मेघ सुहावन झरत कुंज मुख बिन्दु परे ॥ १ ॥ कूंकनि मोर पपइयन की धुनि पिय पिय शोर भरे। करि सुर भृँगन उड़ मुख कंजन हाँकहि सखि गण चँवर करे ॥ २ ॥ रामसरूप भूमि कंचन मय रचित सो नग सगरे। जगमग छाँहि अस दरसहीं रतिपति लोटत पगन तरे ॥ ३ ॥

तथा ॥२५॥

आज तो रसिक पिया सिया को झुलावैरी ।टेक गहि कर कमल रतन मय पटुली, झोकनि मधुर उठावैरी, लगावैरी ॥ १ ॥ हँसि हँसि गान करत सखियन संग, पग सों ताल जमावैरी रमावैरी ॥ २ ॥ राम सरूप पोंछि मुख बिन्दुन, देह दशा सुरझावैरी, भुलावैरी ॥ ३ ॥

दादरा ॥२६॥

झूला झांकी तुम्हारी हमैं प्यारी ॥ टेक ॥

दाहिन श्याम कुवँर सुन्दर अति वामें सुघर जनक क्वांरी।
पान चबात भुजा अँसन दै, निरखति होत अजब यारी॥
रामसरूप अली प्रीतम ढिग, गान करत दै दै तारी॥

तथा ॥२७॥

झूला झांकी तुम्हारी हिय वसिगै॥ टेक॥

झोंका देत चितै रस चितवनि, वरछी नोक सरिस धसिगै॥
पान चबाइ अलापत हिलमिल, मुख माधुरी सुरति फँसिगै॥
रामसरूप अली रस बस भई, मन अभिलाष उमँग हंसिगै॥

तथा ॥२८॥

झोंका भावै न लाल हमैं मन में॥ टेक॥

झोंकादेत झकोरत नग २ श्रमक नहोत ललीतन में॥ १॥
इततो उमड़िरही सरजूअति नभ दामिनि तड़पति घन में॥
रामसरूप कहा नहि मनहो करिहहिं मान सिया छनमें॥

तथा ॥२९॥

दोनो झूलत आज रसिक भीने॥ टेक॥

बन प्रमोद बिच कदम कुंज में, गावत राग मधुर झीने॥
तोरहि ताल सखी बाजन में, सिय लिपटाति पिया सीने॥
रामसरूप देखि बावरि भई, रति पति कोटि कलन छीने॥

जलबिहार के पद ॥३०॥

अवध सइयां खेलत नीर बिहार ॥टेक॥

हंसा कार नाव परराजत, संग सिय सखिया पियार ॥१॥
नांचहिं घूमगाइ बाजन में, तिन संग आप सितार ॥ २॥
मंद मंद मुसक्यात सखिन ते, सरजु तरंग निहार ॥३॥
रामसरूप अली जै २ कहि, बरषति सुमन सिहार ॥४॥

दादरा ॥३१॥

खेलत राम निवारा, सिय संग सरजु धारा ॥ टेक ॥
खेवत बांस लिये कर कमलन, केवट वेष सम्हारा ॥१।
बोलत हँसत कमर लचकावत, कौतुक करत अपारा ॥२
रामसरूप मांगि उतराई, मन हरि लेत हमारा ॥ ३ ॥

दशहरा के पद ॥३२॥

जात दशहरा चौक तो सजेरी ॥ टेक ॥
धरितनु पटजेवर कंचनमणि, साजि २ शिरपर ताजतौमजेरी।
लै धनुबाण तूणकटि पै रचि, चढ़ि २ चहुं शिरमौर गजेरी ।
श्वेत छत्र श्रीराम कुंवर पर, ढुरत चँवर फहरात तौ धजेरी ।
रामसरूप राज कुँवरन लखि, नरनारिन धन धाम तौ तजेरी।

शरद के पद (दादरा) ॥३३॥

छाई चन्द्र उजेरी लली अब कीजे न देरी ॥ टेक ॥
कर सिंगार लाल ठाढो उत, चितवत हैं मग तेरी ॥ १ ॥
तुमहु साज वाज साजहु इत, उठिये रागिन टेरी ॥ २ ॥
रामसरूप मान तजिये अब, चलिये सौगन्ध मेरी ॥ ३ ॥

तथा ॥३४॥

नीकी लागे शरदनिशि चन्द्र में ॥ टेक ॥
रास भवन छत पर निरतत दोउ, लाल लली आनन्द में ।

झनकति झाँझमृदंग बीनधुनि गावहिंअलिमिलि संगमें॥
लेत ताल छुई चिबुक परस्पर, मोहत कर कटि भंग में ॥
रामसरूप अली घायल लखि, परि चितवन के फंदमें ॥

ठुमरी ॥३५॥

आज शरद की पुनो है गोइयां, बाजी सानाना-
नानाना सहनइया ॥ टेक ॥ भूषण बसन रचित
फूलन के, श्रींगारो हिय सिय सइयां ॥ १ ॥ ज़ुरि २
बाल ताल गावहु सब, रंग महल की अंगनइयां ॥
रामसरूप अली प्यारे ढिग, निरतहु देंदें गलवइयां३॥

तथा ॥३६॥

आली शरद सुहावन रैन में ॥ टेक ॥ शरद
सुहावन हैं सखि प्यारी, छटकि रही निशि शशि
उजिआरी करषत रस मन मैन में ॥ १ ॥ रहस करन
की कीन तैयारी, प्रिय प्रीतम सुन्दर छबि धारी, मोहत
ताथेइ बैन में ॥ २ ॥ बिबिध ताल बाजन गण बाजै,
छमक छुम्म छम नूपुर गाजै, मोहत मन दोउ नैन में
॥३॥ रामसरूप अली नृप लालन, अरुझि गये कर
गहि गहि बालन, बढ़त सिन्धु सुख चैन में ॥ ४ ॥

पद ॥३७॥

आज सखी महल बीच निरतत रघुनन्दुरी ।टेक॥
उघटत संगीत जाल बाजत बहु यंत्र ताल, थिरिक २
बदहिं बाल, गति सो प्रवन्दुरी ॥ १ ॥ मोहत कर

कमल फेर, बरषत रस चपल हेर, गावत हँसि बेर बेर, छटकत मुख चन्दुरी ॥२॥ तानत रहि २ अलाप, हाव भाव करि कलाप, रसिकन मन भ्रमर जाप, प्रभु मुख मकरन्दुरी ॥ ३ ॥ घुमरनि मणि खँभन बीच, छांहीं चित लेत खींच, रामरूप बचन बीच, जै जै सुख कन्दुरी ॥ ४ ॥

पद ॥३८॥

प्यारी तेरो मुख मेरे मन को हरतरी ॥ टेक ॥ शीश फुल चन्द्रिका नकबेशर, अधरन हलि मेरे प्राण को गहतरी ॥ १ ॥ विन्दु चिबुक श्रुति फुल कपोलन बचन सुधा मानो धार तो झरतरी ॥ २ ॥ भौहैं सुभग नयन लखि मनसिज, हाथ जोर धनुबाण तो धरतरी ॥ ३ ॥ रामसरूप कोटि शशि लावण, बिनगल बांहीं मोको कल न परतरी ॥ ४ ॥

तथा ॥३९॥

जीवन मोर तुम्ही पिय प्यारे ॥ टेक ॥ ताकति रहति सदा शशि मुख तव, नयन चकोर मनहुं तनु धारे ॥ १ ॥ श्याम बरण नख सिख पंकज दृग अद्भुत हाँस काम बहु हारे ॥ २ ॥ रामसरूप रसिक कोइ समुझत. जिन रस राज कुँवर उर धारे ॥ ३ ॥

तथा ॥४०॥

तुम बिन हाय जियों कैसे प्यारी ॥ टेक ॥

चन्द्र बदनि तव अधर सुधा हित, ललकति रसना हमेस हमारी ॥ १ ॥ सहि नहि जात बियोग पलक भर, चलत नीर दृग कमल पनारी ॥ २ ॥ रामसरूप बचन पिय के सुनि, धाइ लिये उर जनक कुमारी ॥ ३ ॥

दादरा ॥४१॥

तेरे नैना कटीले अवध बलमा ॥ टेक ॥ मनहुं ललाम काम तरकस दोउ, चितवत बाण चलत पलमा । १ ॥ देत घुमाय जिधर मुख शशि सम, को अस नारि रहत कलमा ॥ २ ॥ रामसरूप गई सुध बुध तब, जब लखि बांहि सिया गलमा ॥ ३ ॥

तथा ॥४२॥

जिया ले गयो नयन के नोक में ॥ टेक ॥ चितवतही कर दीन चैन बिन, मीठी बतियन झोंक में ॥ १ ॥ गयो छिपाय प्रमोद बिपिन में, हाथ हथोरी ठोंक में ॥ २ ॥ रामसरूप अली नहिं जीहो हाय दइ यह शोक में ॥ ३ ॥

तथा ॥४३॥

ऐसे नेही से नेहा लगाना ना ॥ टेक ॥ भूषण बसन सजित नख सिख लौं, श्याम छटा हिय लाना ना ॥ १ ॥ अंतर ध्यान होत छिन छिनमें, मिलना कोइ प्रमाना ना ॥ २ ॥ सरयू तीर प्रमोद बिपिन में कोउ सखि बदन दिखाना ना ॥ ३ ॥ रामसरूप

चलहु मिथिलै सब, जब जावैं तब आना ना ॥ ४ ॥

तथा ॥ ४४ ॥

चलो सजनी पिया सरजू किनरवा ॥ टेक ॥
कंचन घाट जहाँ नाना द्रुम मणि मय रचित बिबिध अमनी ॥ १ ॥ जहँ खेलत रघुलाल सखन संग मृदु मुसक्यान हृदय धरनी ॥ २ ॥ इत उत धाइ छिपत कुजन जब, लुकि मन लेत चपल झँकनी ॥ ३ ॥ राम सरूप अली रघुबर ते तन मन आज लगी लगनी ॥ ४ ॥

तथा ॥ ४५ ॥

कैसे बिरहे में सब दिन गमाना परी ॥ टेक ॥
गयो छिपाय दिखावत नहि मुख, क्या सब लोग हँसाना परी ॥ १ ॥ तुम्हरो नाम जपत उर अंतर, क्या मुख शोर मचाना परी ॥ २ ॥ वेद पुराण कहत सुख-सागर, क्या दुखसागर गाना परी ॥ ३ ॥ रामसरूप अली सिय नाते जैसे बनी तैसे आना परी ॥ ४ ॥

तथा ॥ ४६ ॥

तेरी बांकी नजरिया गजब किया रे ॥ टेक ॥
भृकुटी धनुष चढ़ाइ नयन सर, छाती पै चोट अजब दियारे ॥ १ ॥ पान चबाइ हाँस हंसि रस मै, रस शृंगार सजग कियारे ॥ २ ॥ रामसरूप अली उर कसकत, घायल कीन्ह अवध पियारे ॥ ३ ॥

तथा ॥ ४७ ॥

प्यारे रघुबंशी गजब तोरी हांसी ॥ टेक ॥ नासा मणि अधरन जिय मारति, मृदु बोलन की डार गरे फांसी ॥ १ ॥ तलफत फिरति परत कल नाहीं, बांकि तकनि फोरि उर गांसी ॥ २ ॥ रामसरूप अली प्रीतम सुन, दे रस अधर जिये तव दांसी ॥ ३ ॥

गेंद खेलने के पद ॥४८॥

खेलन जब सरयू तीर चले ॥ टेक ॥
दो० श्याम गौर सुन्दर सकल सजि२ साज नवीन ।
सरजु ढिग एक ठौर हुइ, गनि गनि गोइंयां लीन ॥
हँसे सब दै दै बाँहि गले ॥ १ ॥
दो० स्वर्ण रत्न की वल्लिका, लीन परस्पर हाथ ।
फेंक गेन्द ताड़न लगे. तमकि ताकि एक साथ ॥
गिरन नहि पावत भूमि तले ॥ २ ॥
हरषित रामसरूप जन, बसन सुधारत धाय ।
देख देख मुख माधुरी, मन नहिं नेक अघाय ॥
मगन अति सब अभिलाष फले ॥ ३ ॥

गजल तथा ॥ ४९ ॥

दोनो खेलन आज जुटे मनते ॥ टेक ॥ रेखता सिय जू चलाई कन्दुक पिय प्राण को हरैं, उतते अनूठ लालन गति सान की धरैं, नीके लागति दामिनि औ घनते ॥१॥ इत चन्द्रिकादि भूषण शोभा सुचीर

की, उत क्रीट पीत अंबर कलगी सुहीर की, तन उघरत एकन पै गनते ॥२॥ दोउ ओर सखी हरषित फुलों को चलातीं, जै २ सुनाय बिनती, महलों को चितातीं, दृग लावत नेकन है अनते ॥३॥ लखि रामरूप आली लै पान दान को, हंसि के खवाइ बीरा दोउ सुख निधान को, सुख सिन्धु बढ़्यो कबि के भनते ॥ ४ ॥

दिवाली के पद (दादरा) ॥५०॥

लखि ले गुइयां खिलत दोउ पासा ॥ टेक ॥ मंडप चौक मध्य मणि मय जहां, दीपावली परकासा ॥१॥ हमरो २ बोल हरत मन, मुख अरबिन्दन हासा ॥२॥ रामसरूप फंसत बचियो सखी, बाँकी चितवन लासा ॥ ३ ॥

तथा ॥ ५१ ॥

सखी देखो खिलाड़ी युगल बांके ॥ टेक ॥ इत सिय दमकि हरति दामिनि बहु, उत रघुबर बहु घन नांके ॥१॥ झुकि फेंकत हँसि जात परस्पर, मानहु मंत्र बसी हांके ॥ २ ॥ रामसरूप अली हरषित अति, दय दय पान झमकि झांके ॥ ३ ॥

बिश्वामित्र संग गमन समय सखावों को रामजीसे कहना।

दादरा ॥ ५२ ॥

लैके बांकी सुरतिया चले जावगे ॥ टेक ॥ हम संग त्यागि त्यागि प्रिय वर दोउ, कैसे मुनि संग

डगर जावगे ॥ १ ॥ श्याम गौर सुकुमार बदन तव, मारग कठिन तलफ जावगे ॥ २ ॥ हम सब सखा जियब तुम बिन कस, कछु मन धीर धराए जावगे ॥ ३ ॥ रामसरूप दया सागर दोउ, बिनती यह न बिसर जावगे ॥ ४ ॥

दादरा ॥ ५३ ॥

कहां जाते हो लाल हमे तजि कै ॥ टेक ॥ ॥ रेखता ॥ तन में स्वपीत अम्वर सिर क्रीट को धरो। सजि कै तूणीर कटि पर धनु बाण को सरो ॥ लखि कोटिन काम रहैं लजिकै ॥ १ ॥ विद्या खजान हो तुम सिर मौर सब कला। गाने में गान अद्भुत मन लेत हो गला ॥ जब तोरत ताल बिबिध साजि कै ॥ २ ॥ सरजू के तीर हम सँग खेलैं को जात हो, कुंजो के बीच बीचों शशि से दिखात हो, जब धाइ छिपत इत उत भजिकै ॥ ३ ॥ मुनि संग में तयारी तुम्हरी है हाल में, अब रामरूप डाला विरहा के जाल में, तनु त्यागेगें प्राण अवशि कजिके ॥ ४ ॥

श्री जनक नगर दिखाई के पद गजल कौवाली ॥ ५४ ॥

कुवँर दोउ जातचले मगमें, मोहनी करि मेरे अंग में ॥ टेक ॥
दो० श्याम गौर कोमल महा, रूप माधुरी खान।
रमणी अंग२ में लसै, हैं तिहु पुर के भान ॥

बनत नहिं बरणत छबि नगमें ॥१॥

दो० सुमन बरषि खिरकी गली, झुकि झांको जेहि बार।
राम चलाइ दृष्टि तब, जनु लागी तलवार॥
भई अति घायल रस जंग में ॥२॥

दो० लिखनी लीन्ही झपट कै, चित्र लिखन के हेत।
मैं ही चित्रो सी रही, लखि मुख अधिक अचेत॥
गई नहिं अँखिया उन संग में ॥३॥

दो० धीरज धरिए अब अली, राम सरूप प्रमान।
सिय युत तन मन रंग रगौ, मिलि है प्रीतम प्रान॥
समझ लेहो जब धनु भंग में ॥४॥

तया ॥ ५५ ॥

अल बेला अनुज संग राम हैं ॥ टेक।
गौर बदन संग श्याम सुहावन मानहुँ शशि ढिग कामहैं।
मुख पर कतल करत नक मोती, तापर मृदु मुसक्यानहैं॥
रामसरूप अली सरबस मम, यह प्रिय जानकी जान है॥

दादरा ॥५६॥

सखि छबि देखो कुवँर मन वाले ॥टेक॥ कुण्डल क्रीट शिरन शशि मुख दोउ, जुल्फै डसन नाग जनु पाले ॥ १ ॥ माथन तिलक नासिकन मोती, भृकुटी चाँप नयन सर भाले ॥ २ ॥ श्याम गौर नख सिख मन भावन अली गए गहन हांस जुग जाले ॥ ३ ॥ रामसरूप करिय फुलन झरि, पर न जांय पद पंकज

छाले ॥ ४ ॥

तथा ॥ ५७ ॥

सखी लै गयो जिअरवा अवध रसिया ॥ टेक ॥ सैर छबीलो श्याम बरन, पीत बसन, धनुष धरन, अनोखि अधर छटा, करत कटा, मंद हँसन, उन नैनों की मेरे लगी गँसिया ॥ १ ॥ किए शृंगार घना, खूब बना, रंग ठना, अरी गलियों में अटन, मधुर बचन, जो मैं सुना, बिन फंदे की हाय लगी फँसिया ॥ २ ॥ रामसरूप अली, कमल कली, बिकश चली, भरा मकरंद प्रेम, छूट नेम खूब फली, सिया प्यारे छबि मधु की भइ मखिया ॥ ३ ॥

फुलवारी के पद [दादरा] ॥ ५८ ॥

दशा कस तोरी कहु मोरी गोंईयां ॥ टेक ॥ पुलकित अंग परत डग मग पग काजर दृगन बह्यो मुख ओरी ॥ १ ॥ की कछु पाइ गइ बगिया बिच, की कछु दीख लतन की खोरी ॥ २ ॥ रामसरूप अली धीरज धरु, कहु निज हर्ष लाज तजि गोरी ॥ ३ ॥

तथा ॥ ५८ ॥

कुवँर दोइ देखे सखी फुल बगिया ॥ टेक ॥ श्याम गौर मुसक्यात लतन ढिग, कोटी बसंत काम नहिं लेखे ॥ १ ॥ मोहित करत चराचर को दोउ, कहि नहि सकत शेष श्रुति वेखे ॥ २ ॥ रामसरूप अली सिय लायक, हुइ हहु हमसी तासु छबि पेखे ॥ ३ ॥

ठुमरी त्रिताला ॥ ६० ॥

आली छबि देखु कुवँर सुकुमारन ॥ श्याम गौर मुख कान्ति मनोहर, जनु तनु काम चन्द्र किये धारन ॥ १ ॥ भृकुटी धनुष चलाइ चितै चहुं, मारत नैन वान अनियारन ॥ २ ॥ घूमत फिरत लसत कर दोनन झुकि २ जात सुमन द्रुम डारन ॥ ३ ॥ रामसरूप छैल राघो पर, तन मन भूलि बिसरि पल टारन ॥ ४ ॥

दादरा ॥ ६१ ॥

तेरे नैनों की छैला लगी बरछी ॥ टेक ॥
नोकदार लम्बे ललचावन, फेरन मंद लखनि तिरछी ॥ १ ॥
यक तो हाँस बुझी जहरीली, ताकी पीर फिरति कलछी ॥ २ ॥
रामसरूप अली नहिं जीहो, बिन उर लाये चरन परछी ॥ ३ ॥

गजल नया ॥ ६२ ॥

मन धीर नही आवै सजनी ये देखि मनोहर राजकुवँर ॥ टेक ॥ सिर क्रीट मुकुट कुंडल कानों घुघुवार केश दोउ ओर झुके, मुख कमल मधुर मकरंद पियन जनु मधुप लुब्ध बहु भाँति घुमर ॥ १ ॥ माथा बिशाल पर तिलक किये दामिनि की कांति हरने वाले चितवनि रसाल उन नैनन की मुसक्यान हर्ने बहु काम सुघर ॥ २ ॥ मनको हरते चल लटक चाल हंसो को भी लजवाते हैं, बर भुज अजान धनुबाण लिये छबि वै किशोर सुकुमार उमर ॥ ३ ॥ मिथिला-

Ramlu

पुर में यह छबि दिखाय जौहरी जाल फैलाय दिया, रस रामरूप दोउ रूप परम लखि तन मन भूली पान खबर ॥ ४ ॥

धनुष यज्ञ के समय श्रीजानकीजो के बचन

दादरा ॥ ६३ ॥

कैसी करों गुइयां उमर के थोरे ॥ टेक ॥ अति सुकुमार सांमली मूरति, चितवन अंग अंग चित चोरे ॥ १ ॥ तिन कर धनुष देन पितु चाहत, लखि लखि पीर होत उर मोरे ॥ २ ॥ रामसरूप उठै चाहे नाहीं, हम दृग चन्द्र बदन पर जोरे ॥ ३ ॥

जयमाल समय सखी बचन

दादरा ॥ ६४ ॥

माला पिय पहिरावो, लली अब देरी न लावो ॥ टेक ॥ अब जनि देख भुलाव प्रेम में, झुकि दोउ बहियां उठावो ॥ १ ॥ तब तो लाज रही निज कुलकी, काको आज लजावो ॥ २ ॥ रामसरूप होहु बांये दिशि, जियकी जरनि बुतावो ॥ ३

परिछन के समय सखी बचन

दादरा ॥ ५६ ॥

साँवर दूल्ह नगीना लखो सखी महलन जीना ॥ टेक ॥ सिर पर मौर रचित मोतिन में, जामा घुमरत झीना ॥ १ ॥ भुज केयूर हिये बैजन्ती, तकि दृग होत

अधीना॥ २ ॥ शोभित पीठ तुरंग नचावत, जनु घन मोर प्रवीना ॥३॥ रामसरूप फँसी वा छबि में, जस बनसी में मीना ॥ ४ ॥

दादरा ॥ ६५ ॥

कैसे जोड़े हैं छैल नवीनन के॥ टेक ॥ रेखता ॥ सिर क्रीट मुकुट कुंडल जग मग हमेश हैं, हैं चन्द्र बदन शोभा घुंघुरार केश हैं, जग नयन फँसावन मीनन के ॥१॥ कटि सिंह सी सुहावनि उर फूल माल हैं, हंसो को मान हरते चलि लटक चाल हैं, मुख मोहत बिन्दु पसीनन के ॥२॥ धनु बान गहन नी की चित चाहनी छटा, बोलैं रसाल रसके करते हैं दिल कटा, स्वर मानहु सुन्दर वीनन के ॥३॥ कह रामरूप चारो मम प्राण पियारे, निरखौं सदा अनन्दित नहिं नैन ते न्यारे, प्रति पालक है सब दीनन के ॥४॥

पद ॥६६॥

क्या छबि आज सुघर बनरे की ॥टेक॥ मोतिन मौर जरी को जामा, बालन कांति कनक सकरे की ॥१॥ अधर बुलाक कमल दल लोचन, हांस बिलास मदन झगरे की ॥ २ ॥ कटि पर पीत लसत भुज कंकण, बांकी चाल सिंह नखरे की ॥३॥ रामसरूप रसिक रघुनन्दन, मति हर लीन जनक नगरे की॥४॥

कोहबर को सखी बचन

गजल नया ॥६७॥

बाँकी सूरति लाल तुम्हारी है॥टेक॥ मुख श्याम बरन शोभा सुन्दर हमेश है, तेहि बीच चन्द्र झलकनि मोहत रमेश है, तापै अलकनि पाँति निहारी है॥१॥ माथे में तिलक रेखैं जनु काम बाण की अथवा अनूप किरणें युग प्रात भान की, मानो नैन कृपाण की धारी है ॥२॥ कह रामरूप प्यारे तब हाँस मोहिनी, नासा मणी बिलक्षण अधरों कलोलनी, सोई लखि लखि धीर न धारी है ॥३॥

दादरा ॥६८॥

कैसी झांकी बनो है सिया रामा की ॥ टेक ॥ ॥ रेखता ॥ सिय अंग श्याम सारी, पिय बसन पीत है, सोहैं अनूप भूषण मणि मय सवीत हैं, नीकी लागति घुमरन जामा की ॥१॥ इत चन्द्रिका मनोहर कलकर्ण फूल हैं, उत मौर तिलक माथे कुण्डल सकूल हैं, मुख मोहत चन्द्र ललामा की ॥२॥ खाते खवाइ बीरा हंसि अरस परस में, बोली अनूठ बोलैं अति प्रेम सरस में, जोड़ी लाजति लखि रति कामा की ॥ ३ ॥ हैं इन समान येइ दोउ मधुर मूरती, मन रामरूप खीच लीन मोर सूरती, अब लागी लगन सुख धामा की ॥४॥

दादरा ॥६९॥

जुलुम कर डारो सिया पिया तुमने ॥टेक॥ जामा

पीत मौर मणि माथे, दुलहा रूप मनोहर धारो ।।१।। चहुँ दिशि घूम २ गलियन में, मिथिला सहर कहर अति पारो ।।२।। रामसरूप अली ते हंसि २ नयन चलाय मयन सर मारो ।।३।।

तथा ।।७०।।

मैं माला पहिराउँगी ठाढ़े रहो लाला ।।टेक।। क्रीट सम्हार पान दै मुख में, धरि कर गाला निहाला होइ जाउंगी ।।१।। उर लिपटाई द्दगन दै काजर, चितवन जाला से टाला दै जाउंगी ।।२।। रामसरूप अली मिथिला में, लै कठ ताला रसाला गुण गाउंगी।। ३ ।।

तथा ।।७१।।

सियाबर नैना मारे आली ।।टेक।। कजरारे रस में रतनारे, जनु सर धारे मदन को पैना।।१।। घायल भवन वकौं वायलसी, मातु पिता कछु मोर सुनैना ।।२।। रामसरूप अली साँची कहौं राजकिशोर बिना जिओं मैना ।।३।।

तथा ।।७२।।

मैं तो जै हो सिया के अवध नगरी ।।टेक।। राम कुमार चितै चित लै गयो, मृदु मुसक्यान लटक पगरी ।।१।। होहु तयारि चलहु संग जो जो, करि शृंगार सहेली सगरी ।।२।। लोक लाज तजि मातु पिता ते,

रामसरूप अली झगरी ॥३॥

ठुमरी त्रिताला ॥७३॥

राम बना सो यह चहति वतानी मैं ॥टेक॥ श्याम काम शशि छटा हरत मुख, बचन तुम्हारे रस अधर भुलानी मैं॥१॥ चलिहौं संग त्यागि इत सरबस मानो नहीं चरण कमल लिपटानी मैं ॥ २॥ जबते दीख धनुष तोरन में, तब ते प्राण नाथ पहिचानी मैं, ॥३॥ रामसरूप सिया प्रीतम सुन, तुम्हरे कर बिन मोल बिकानी मैं ॥४॥

दादरा ॥७४॥

नयना मारे है गोइयाँ कुँवर हँसि के ॥ टेक ॥ क्रीट मुकुट कुंडल धनु सर लै, कटि पर पीत बसन लसि कै ॥ १ ॥ ठाँढ़ भयो मुसक्याय महल मग, मम मुख कमल भँवर फँसि कै ॥ २ ॥ बार२ रस लीन चितै छबि, दागी चुनरिया भइ गँसि कै ॥ ३ ॥ रामसरूप अली घायल भइ, तलफत प्राण अवधि बसि कै॥ ४ ॥

दादरा ॥७५

मन भावै हमें मिथिला की गलीं ॥ टेक ॥ जग मगात मन्दिर दोनों दिशि, ऊपर मणि मय भवँर कलीं ॥ १ ॥ द्वार कमानदार तोरन छबि, जनु सुरपति धनु रेत्र भलीं॥ २ ॥ सीताराम चरित गावत सब, केकी कोयल कंठ दलीं ॥ ३ ॥ रामसरूपअली महलन पर

बिहरत रघुबर जनक ललो ॥ ४ ॥

तथा ॥७६॥

हिय मूरति लाल तुम्हारी धरी ॥ टेक ॥ दाहिन बदन सुहात चन्द्र तव. बाम सिया छबि सिन्धु भरी ॥ १ ॥ प्यारी कर अरबिन्द बिराजत, प्यारे सुभग गुलाब छरी ॥ २ ॥ रामसरूप सुहात कछुक नहिं, तव दरशन बिनु मौत मरी ॥ ३ ॥

दादरा दूसरी चाल ॥७७॥

प्यारे ननदोई दरश कब दे हो ॥ टेक ॥ अब तुम जात नगर मिथिला ते, हमरे बिरह बीज उर बोई ॥ १ ॥ जस सुख आय दीन्ह तुम लालन, तस सुख और देइ नहिं कोई ॥२॥ रामसरूप अली सरहज अस, कहि मृदु बचन चरण गहि रोई ॥३॥

दादरा ॥७८॥

प्यारे मेरी खबरिया बिसर जनि जाय ॥टेक॥ जब ते सुना जात मिथिला ते, तब ते तलफति अति कराय ॥१॥ वचन सुधा सम बोल लाड़िले, अब जाते कस बिष पिलाय ॥ २ ॥ हम अबलन तव दरश कठिन अति, जिमि खूंटन गृह गहित गाय ॥३॥ राम सरूप अली सरहज सब, सन्तोषी प्रभु उर लगाय ॥४॥

गजल कौव्वाली पतंग उड़ाने का ॥७८॥

सखी री आज महलों पे उड़ावै चंग रघुराई

।।टेक।। सखिन की भीर पीछे में किशोरी संग सुखदाई, बदन शृंगार सब कीन्हे कंगूरों क्या छटा छाई ।।१।। बढावत झोंक कर कमलो सुहावन डोर मन भाई, घटावैं ताकि नभ ओरी सिया दिशि मंद मुसक्याई ।।२।। सरूपानन्द तब प्यारी. पिया ढिग हरषि कै जाई पियारति पोंछ मुख अंचल निहारति श्याम गुण गाई ।।३।।

दादरा ।।८०।।

सिय पिय चंग उड़ावैं, गगन में शोभा मचावैं ।।टेक।। श्याम बरन प्यारी कर थिरकत, प्यारे श्वेत नचावैं ।।१।। चक्कर काटि काटि लिपटावत. जनु शशि राहु लड़ावैं ।।२।।मन्द२ मुसक्यात परसपर, पग धरि जिय ललचावैं ।।३।। रामसरूप अली जै जै कहि. सिय की जीत मनावैं ।।४।।

बसन्त के पद ।।८१।

मैं तो आइहौं महल सुनि होरी की शोर, गहि रामकुवँर रंग डारोंगी वोर ।।टेक ।। धुनि झाँझ मजीरन झींक झंग, मोहर सहनी कठताल जग, वीणा सितार लहरति सरंग, लावति रस बेणु केलि रंग, गमकत मृदंग डफ ताल जोर ।।१।। मैं पाइ गई दिन आज भलो, करि लेहो सबै जस मोहि छलों, इत देखो जरा पिय फाग बीर, मजिहौं धरि मुख में मोती हीर, अब

लाल जाव भजि कौन खोर ॥२॥ चोवा चंदन केशर अबीर, रंग डारी भिगावों बिबिध नीर, बर जोर तुम्हे चुनर सजाइ नचवावो सिय की जै बुलाई, रंग श्याम बदलि अब लेहु गोर ॥३॥ हँसि हेरि पिया दिशि चाबि पान, लखि सकल सखि न तब कीन्ह गान, रंग डारि डारि गति चपल कीन्ह, सखि रामरूप छल जाय कीन्ह, गहि लीन्ह धाई पट पीत कोर ॥४॥

तथा ॥८२॥

मैं तो खेलोगीं फाग पिया प्यारे को पकर, यहां हार जीत की कौन फिकर ॥ टेक ॥ करि हाँस सदा मटकाय अंग, महलन प्रमदन संग करत जंग, गहि आज पिताम्बर लेउं खींच, केशर चंदन मुख मलउं कीच, सब काढ़ि लेउं वा दिन की अकर ॥१॥ घाँघरि उढाय रचि कमर मूल, सिर खींच केश धर शीश फूल, सब सखन ओर मुख खोल खोल, लज्जित नच वावों टोल टोल लगि पीठ ढोल की देहुँ धकर ॥२॥ फिर रंग महल चहुँ दिशि फिराय, सब सखन सहित हारी बुलाय, कउनी विधि सो नहि देउं जाय, चाहे बार बार सौगन्ध खाय, लै फूल माल बांधोगी जकर ॥३॥ सखि चारुशीला लखि लाल ओर, मुसक्याय, गई दृग मार कोर, सखि रामरूप जो बचन चहौ, झुकि जाय सिया की शरण गहौ, नहिं रोवोगे लाल

परि खूब झगर ॥ ४ ॥

होली के पद राग काफी ॥८३॥

खेलत सरयू पार री दोउ रंग रंगीले ॥ टेक ॥ ठाढ़े चपल सखन सखियन बिच, जीत को बदत करार, धोखा दै पिचकारी चलावत, फेंकत मोतिन छार री, हँसि चट चट कीले ॥ १ ॥ गावत फाग घूमि पीछे को, बाजन ताल निहार, मणिमय भूमि धरत पद छुम छुम, रोकत फूलन मार री, कर मट मट कीले ॥ २ ॥ दोउ दिशि लाल लाल पट भूषन उरझि गये उर हार, उमड़ि रह्यो होरी रस अद्भुत, रूक गई सरजु धार री, छवि छलक छबीले ॥ ३ ॥ राम सरूप अली होली सुख कहत न पार अपार, सुन्दर रूप अनूप मोहने, पोहि गये दृग तार री, अट के हट कीले ॥ ४ ॥

तथा ॥८४॥

काहे को देर लगाये अगर होरि खेलैं जो आये ॥ टेक ॥ तुमतो रसिक लाल रघुनन्दन, राजकिशोर कहाये, शर धनु डारि लखौ इत प्यारे, का हम पर सचु पाये, कमर पिचकारी छिपाये ॥ १ ॥ बहुत दिनन महँ पाइ अकेले, अब चक्कर में आये, लेंउ निकारि कसर सब लालन, जो नसखा तत्र धाये, करौं तुम को मन भाये ।२। सुन्दर श्याम चन्द्र अमृत छबि, मम उर बीच समाये, नयनन नोक घोक मन लीन्हो, चोट कठिन के घाये

जात कित मोहि हराए ॥३॥ रामसरूप अली कह प्रीतम, तव हित रंग घुराए, अस कहि फेंक दियो हँसि हरि पै, श्याम कपोल ललाये, हँसी सब मुख मटकाये ॥ ४ ॥

तथा ॥८५॥

होरी खेलत अति अभिरामा सहित सिय सुन्दर रामा ॥टेक॥ इत सिय संग सखी शशि बदनी लिये रंग बहु सामा, उत रघुनन्दन छैल सांवरो संग अनुज सुख धामा, करत दृग चोट ललामा ॥१॥ लै पिचकारि ताल हिल मिल दै, करहिं परस्पर धामा, इत तर बोर भई सखि सारनि उत धोती पटु जामा, मचो होरी हंगामा ॥२॥ जै जै कार करैं दोउ ओरी स्वर्ग सुरन की वामा, बरषहिं सुमन नाचि उर प्रमुदित गाई युगल गुण ग्रामा, लेहि बहु भांति गतामा ॥३॥ रामसरूप निरखि प्रिय प्रीतम उँमगत उर आरामा चितबन चाल मंत्र जनु डारत, मोहीं नारि तमामा, अमित बारहिं रति कामा ॥४॥

गजल कौव्वाली ॥८६॥

सखी री आज होलीमें लला को मैं छकाऊंगी ॥टेक॥ रसीले रत्न कहि सइयां, व कुम कुम लै छमक छइयां, पकड़ कर मोहनी बइयां, कपोलों में लगाऊंगी ॥ १ ॥करोंगी आज बरजोरी, पिताम्बर लेउँगी छोरी,

बनाके सौंवली गोरी, पकड़ महलों घुमाऊँ गी ॥ २॥
छबीलो छैल रस जाली करैंचहुँ कोटि फर चाली,
गुलचि सुख रूपनीआली. विजय को डफ बजाउंगी ॥

दादरा ॥८७॥

आज छाड़ोगीं तुम को नचाई पिया ॥ टेक ॥
बहुत दिनन में आइ लाड़िले, नैन की सैन सो प्राण
लिया ॥१॥ भूलेहु खबर कहहु वह दिन की, का तुम
हम संग कौल किया ॥२॥ बिन लखि ताल जान
नहिं देहों, तरसायहु बहु मोर जिया ॥३॥ रामसरूप
बीण गति लै लै, भरिहों प्रेम लगाइ हिया ॥४॥

तथा ॥८८॥

होरी खेलत लाल महल गलियां ॥टेक॥ गावत
फाग चितै बनितन दिशि. मटकत मार कमल कलियां
॥ १ ॥ इत उत धाइ चढ़त जीनन पर, गाल गुलाल
मलत छतियां ॥ २ ॥ हँसि२ रंग झराझर बरषत, मणि
मय भूमि वहैं नलियां ॥३॥ रामसरूप अली लखि
पिय छबि नाचै गाइ सियाकी अलियां ॥४॥

दादरा ॥८८॥

सखी होरी मचाई सिया के सइंया ॥टेक॥ आइ
अचानक डारि दियो रंग, मैं अति लाज खड़ी गोइंयां
॥१॥ गाल गुलाल लगाइ हिये भर, अति झकझोर
कसकि बइयां ॥२॥ रामसरूप अली या गति कर
मानत नाहि परौं पइयां ॥३॥

तथा ॥८०॥

कुवँर आए सखी खेलन फाग ॥टेक॥ राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन, संग सखन के गन भाये॥ १ ॥ गावत राग सरस चौतालन, थाप मृदंग तड़क ताये ॥२॥ लै २ नाम पुकारि सखिन का, रंग महल रंग बरसाए ॥३॥ रामसरूप श्याम छबि लखि २, इन नैनन को फल पाए॥४॥

तथा ॥८१॥

नयन गासी सखी मारी है लाल ॥टेक॥ भृकुटी मनहु कमान तान सजि, काजर सान धरी खासी ॥१॥ जहं देखो तहं श्याम श्याम तनु, अब नहि और परत भासी ॥२॥ रामसरूप अली नहि तिरपित, यह मुख चन्द्र छटा प्यासी ॥३॥

रखिया डफ का ॥८२॥

नहिं मानत राज कुवँर गोरी॥ टेक॥ चंचल फिरत लिये पिचकारी देखत घात करत चोरी ॥१॥ लखि उर मानिं छिपाति बगल में, कोमल अङ्ग उमर थोरी॥२॥ गावत रंग चलाइ इतै को, तोरत ताल हगन मोरी ॥३॥ रामसरूप अली रस बस में, बर बस बाँहि गहत मोरी ॥४॥

तथा ॥८३॥

दोनो खेलत रंग रसिक पीने ॥ टेक ॥ बाजत झाँझ मृदंग ताल डफ, मोहत कट तालन वीने ॥१॥

झुकि२ रंग चलाइ परस्पर, गावत फाग झमक झीने
इत तर वोर भई सिय प्यारी, उत प्रिय प्राण बसन भीने
रामसरूप अली प्रीतम को, हिल मिल प्रेम भरत सीने॥

रसिया होरी ॥८४॥

या गति कर दीन्ही फागुन में रसिया राजकुवँर मेरी बीर ॥ टेक॥ मेरी महल के ढिग है निकस्यो संग सखन लै भीर, मृदु मुसक्यान दिखाय बिकल करि मार्‍यो नयन की तीर ॥१॥ ताको चोट कहौं का सजनी भई अचानक पीर। ब्याप्यो जहर श्याम रस नग नग धरौं कौन बिधि धीर॥ २ ॥ मोरी दशा भई पपीहा ज्यों जैसे स्वाती नीर। अथवा जाय मिलौं प्रीतम सों भरि उड़ान वनि कीर ॥ ३ ॥ रामसरूप अली कह आली अब जनि होय अधीर। चलु संग आज मिलादूँ तोको पकड़ौं सरयू तीर ॥ ४ ॥

तथा॥८५॥

सब जग होइ गइहै बदनामी रसिया तोरे कारण मोर ॥ टेक ॥ तुम बिन नेक सुहात कछुक नहिं. शाम रैन दिन भोर। तव सूरति सुधि करि छन छन मे. हिय बिच होति मरोर ॥ १ ॥ श्याम किशोर अंग मन मोहन क्या मुख बरणों तोर। चितवन चंग फँसाय कामहुँ रहि गयो नाक सकोर ॥ २ ॥ मैंहुं श्याम भई तेरे संग छुटि गयो रंग गोर। चोभि गयो चित खींचत

नाहीं कटि पिताम्बर कोर ॥३॥ रामसरूप अली कहै प्यारे अब सुनि लीजै मोर । तजि फरफन्द सदा दरशन दे बन प्रमोद की खोर ॥४॥

तथा ॥ ८६ ॥

छिप गयो कित धौं नेह लगाके रसिया अवध नगरिया केर ॥ टेक ॥ उजियारो मुख दृग कजरारो मम दिशि हँसि गयो हेर ॥ पुनि उरलाई पियार मजे में गयो कमल कर फेर ॥१॥ जैसे मीन नीर बिनु तलफे तेहि बिधि भय अवसेर । धीरज होत नहीं अब आली, छतिया गई धकेर ॥२॥ जहँ तहँ फूल बाटिकन रम २ खोज फिरी बन खेर । बिबिध जलाशन तीरन २ घूम फिरी चहुँ फेर ॥३॥ रामसरूप दया नहिं आवे, हार गई तोहिं टेर । अब मैं जान कठोर हियोको चावन बारे बेर ॥४॥

दादरा ॥ ८७ ॥

नहिं भूलै खबरिया तुम्हार, अवधके हो बालमा ॥टेक॥
शै० तव चन्द्र बदन, हरन मदन, मान देखिकै
मृदुबोलमारडालाहँसिनैनफेरकै, दिलकरकैनजरियातुम्हार।
शै० कच कुंडल, मुख मंडल, हलि जुल्म किया है,
जनु नाग केक शशि रस हित जंग लिया हैं,
उर उरझी कलगिया तुम्हार॥ २ ॥

शे० शुढि प्रबलों कर कमलों, धनु बाण लिया है।
मानो श्रृंगार जग में अवतार लिया है॥
नीकी लागै उमरिया तुम्हार ॥३॥
शे०—कह रामरूप है अनूप आते रहियें।
आनन्द भरी छिन२ में लाते रहियें॥
सदा निरखौं डगरिया तुम्हार ॥४॥

पद ॥९८॥

सिय को ऐसो बदन सजनमां॥ टेक॥ शिर पर क्रीट कान दोउ कुंडल सुन्दर भाल चदनमां, श्याम शरीर पीत पट शोहत, जैसे दामिनि घनमां॥ ॥१॥ नयन बिशाल अधर मन खींचत, अमृत झरत हँसनमां॥ फूलन माल हिय इमि राजति, सुरसरि धारि'गगनमां ॥२॥ कंचन रत्न भांति बहु भूषण राजति दोनों करनमां॥ सुन्दर बाण धनुष छबि अतुलित मानहुं प्रगट मदनमां ॥३॥ रामसरूप अली का बरनौं चूभि गयो मेरे मनमां॥ कोटि यतन अब निकसत नाहीं, कौशल राज ललनमां ॥४॥

तथा ॥९९॥

मेरी सिया की समता को भाखी ॥टेक॥ जिनके भ्रू बिलास ते माया सकल सृष्टि रचि राखी। करत प्रणाम शम्भु ब्रह्मादिक, कृपा कटाक्ष लखत भर आखी ॥१॥ क्षीर सिन्धु सम तनु सुन्दरता, रती रूप

अभिलाखी ॥ वसैं भ्रमर बन मुनि अन के मन, अरुण चरण पंकज रस चाखी ॥२॥ रामसरूप राम पुरुषोत्तम मरजादा नहिं राखी । रोवत२ फिरे बिपिन में बालमीक कबि हनुमत साखी ॥३॥

दादरा ॥१००॥

लागत लाल हमैं तुम नीके ॥टेक॥ माथैं क्रीट कपोल गोल पर, छटकति कुंडल रतन कनीके ॥१॥ भ्रोंठ कमान बचन सुन्दर सर, मारत हंसि धर सान धनीके ॥२॥ चितवन चक्र चलाइ हतत उर घायल मन बहु रूप धनीके ॥३॥ रामसरूप रसिक चितवहु इत, टूटे तंत्र उरोज तनीके । ४॥

तथा ॥१०१॥

न छबि कहि जाती प्यारे रघुबर की ॥टेक॥ श्याम बदन शशि सम छटकति द्युति, सुघर कपोल कांति रद पाती ॥१॥ सुन्दर बाल अधर रस बरषत, जालीम नैन अलिन गण घाती ॥२॥ रामसरूप बिशारत तन मन नख सिख निरखि मगन मति माती ॥३॥

तथा ॥१०२॥

तेरे नैना श्याम जिया लागे ॥टेक॥
तीखे चमकीले आरन से, पलकच्च दमन मगन पागे॥१॥
पीर के मारे भई धीर बिनु, अब नहिं चैन परत भागे॥२॥
रामसरूप घैरे कस जैहौं. हा सब मातु पितन आगे॥३॥

ब्यारू के पद बिहाग ॥१०३॥

ब्यारू करत लाड़ली लाला ॥टेक॥
षट रस बिंजन थार कनक मा, हैं अन गिन पर काला॥१॥
बार वार पूछत परसावत, स्वाद कहैं सिय वाला ॥२॥
रामसरूप अली जल प्यावति, कहि२ बचन रसाला॥३॥

तथा ॥१०४॥

अचैं दोउ सिंहासन सोहे ॥टेक॥
पान खात सजि माल परस्पर, बिबिध सुमन पोहे॥१॥
अतर लगाय दिखावत दर्पन, कल कपोल टोहे ॥२॥
रामसरूप अली मुसकन लखि, अंग२ मन मोहे ॥३॥

आरती गान ॥१०५॥

कुवँर की आरति होन लगी, निरखत रूप ठगी ॥टेक॥ कंचन थार वर्ति शशि वासित, जगमग२ जोति प्रकाशित नख शिख छबि उमगी ॥१॥ बर्षि प्रसून अतर पिचकारी, गाय उठी जै जयति उचारि, ताल मृदंग दगी ॥२॥ यंत्रन गतिन ततिन पग धरि धरि, अस्तुति करहिं चरन शिर करि२, शारद देखि पगी॥३॥ रामसरूप मगन नित गावत, हर्षिनिरखि दोउ छबि उर लावत, अद्भुत प्रीति जगी॥४ ॥

खेमटा ॥१०६॥

चिरंजीवै याजोड़ी सदा लालकी ॥टेक॥ क्रीट मुकुट चन्द्रिका मनोहर, कुंडल तिलक झलक भालकी ॥१॥ हिलत मिलत मति हरत परस्पर, कंचन वेलि

तमाल की ॥२॥ रामसरूप अली।महलन में, पुरवहु सेवा सदा मालकी ॥३॥

बिहाग ॥१०७॥

हमारे उर दो भुज रूप बसे ॥टेक॥ जनकलली सुन्दर रघुनन्दन, दै गल बाँहि लसे ॥ १ ॥ पान खवाय परस्पर निरखति मृदुमुसकाइ हसे ॥२॥ इतकर कमल उतै सर सुन्दर, धनु कटि तूण कसे ॥३॥ राम सरूप अली रसिकन मन, निस दिन रस बरसे ॥४॥

दो० रचि अनूप पद माल यह, रामकुवँर उर दीन्ह।
बार२ मुख चन्द लखि, दृग चकोर सम कीन्ह ॥

इति श्रीस्वामी रामसरूपजी परमहंस कृत
पद कुसुमावली समाप्तः॥

अन्य फुटकर पदकुसुम।

श्रीमदाचार्य्य स्तुति छन्द हरिगीतिका ॥१॥

श्रीराम रामानन्द भजु सुख कन्द जग में जल मते। जे जन अपावन कीन्ह पावन भये भवरूज ते गते ॥ पाखंड नासन धर्म भाषण चन्द्र सम सुख प्रद सदा। नित नौमि रामसरूप तव पद भक्ति मांगत सरबदा ॥

दो०—पापहरन सीतारमन धर्म धरन में आर्य।
श्रीसम्प्रदा प्रगट ध्वज, रामानन्द आचार्य्य॥२॥

जैति जयति सिय लाडिली जैति लाड़िलेलाल।

जै टकोर मृदंगकी, जैति बीए रस ताल ॥३॥
अब फुटकर पद सुमन कल, लिखि हों चित्य लगाई।
पीपी रस मुख कमल मन, रखिहों भ्रमर बनाई ॥ ४ ॥

पद कव्वाली ॥२॥

धन२ रामानंद महराज कलि में जक्त सुधारन वाले ॥टेक॥ अवध में यंत्र मलेक्षों गाड़, हजारो हिन्दु दिये बिगाड़, सिद्धता तहां प्रकाशी काढ़, करे सब धर्म सनातन वाले ॥ १ ॥ कर २ राम मंत्र उपदेश, पावन कीन्ह अनेक नरेश, भक्ती छाई रही सब देश, महा भव सिन्धु उतारनवाले ॥२॥ जिनके बचन प्रचंड दिनेश, अज्ञता रहत नहीं तमलेश, मनावों रामसरूप हमेश, सरन श्रीरामपुकारन वाले ॥३॥

तथा ॥३॥

भजुमन यतीराज योगिन्द्रस्वामी रामानन्द की जै हो ॥टेक॥ लीन्हो प्रगट ब्रह्म अवतार, टार्‌यो सकल भूमि के भार, कीन्हेउ रामभक्ति परचार ॥ स्वामी० ॥१॥ परवर राघवनन्द महराज, तिनके शिष्य भये रघुराज, जेहैं सब संतन सिरताज ॥२॥ जिनके अनुचर भये महान, तारे सारे पतित जहान, धरि२ राम तत्वकिरपान ॥ स्वामी० ॥३॥ टेरत रामसरूप पुकार, जो तुम तरन चहो संसार, दृढ़ करि गहो स्वामि पथ सार ॥ स्वामी० ॥४॥

बिहाग ॥४॥

जै२ दशरथ सुत सुकुमार ॥टेक॥ सरल हृदय कोमल वच सुखमय, मूरति अनूपम धार ॥१॥ करुणा कर निकेत सुखमाकी, लाजत कोटिन मार ॥ २ ॥ शिवब्रह्मादि चरन बन्दत जेहि, गावत यस श्रुति-चार ॥३॥ रामसरूप प्रणत आरती हर स्वामि राम हमार ॥४॥

गजल कौवाली ॥५॥

कुवँर सब राज भवन जाते गलिन सब नारिन ललचाते ॥टेक॥ दो० कोइ श्यामल कोइ गौर हैं, लीन्हे रतन कमान। चितै सान मुसकान रस, लेत अलिन की जान॥ सरस मिलि जुल्म राग गाते ॥१॥ दो० बाजन स्वर भरि२ मधुर, तोरत ताल तमाम। अद्‌भुत तुरंग नचाय कै, करत किन्नरो काम ॥ ललित टिटकार करत आते ॥२॥ दो० कल कपोत हंसन लरैं, नाचहिं छजन मोर। कंठ चरण तनु जानि निज कुंहुकत सुन्दर शोर ॥ उड़त नभ उपर छबि पाते॥ ॥३॥ दो० चँवर छत्र आदिक लिये चहु दिशि सोहैं दास। पान खयाय सरूपजन रामकुवँर के पास॥ मुदित सुख लेत सीय नाते ॥४॥

ठुमरी ॥६॥

सांची कहौ गुइयां कहां सईयां धनुधारी' देख-

न को तरसै अँखियां हमारी ॥टेक॥ अन्तर ध्यान भयो होली में, खोजत डोलें सखियां हमारी ॥१॥ जानि परै इत प्रभा चन्दसी, आइ छिप्यो का महल तुम्हारी ॥२॥ पल२ बीतत मोंहि कलप सम, खोलहु पट अब सपथ हमारी ॥३॥ रामसरूप घरै नहिं जेहौं. जो नहिं पाउं पिताम्बर धारी ॥४॥

पद ॥७॥

देखो सखी श्याम तिया यक आई ॥टेक॥ करन-फूल कल लोलन लरियां, सेन्दुर मांग भराई, अस मन मोहत सघन घटा बिच मानहुँ अरुण किरण रचि लाई ॥१॥ लाल अधर लटकन लटकाये, तिरछे नैन चलाई। भ्रू बिच बिन्दु खौर कंचन को मानहुं दूज चन्द्र छटकाई ॥२॥ कटिते लसति शीशलौं सारी, कुसुम रंग छबि छाई। सजे उरोज़ बजावति नूपुर, भाव करति होरी गति गाई ॥३॥ छिड़कति रंग लिये पिचकारी मन्द२ मुसकाई। नाम ग्राम पूछे नहिं भाषति राजमहल दिशि हाथ उठाई ॥४॥ रामसरूप श्रीठाकुर को, चीन्ह गई लपटाई। दृग जल श्रवत कहति प्रीतम ते. अह मोहितयह रूप बनाई ॥५॥

दादरा ॥८॥

प्यारे रघुबंशी कहो कित भूले ॥टेक॥ क्रीट मुकुट कुंडल हरषित मुख, नख शिख तरु तमाल से फूले ॥१॥

इत उत चपल चकित चितवत कस, चोखे नयन पैन हिये हूले ॥२॥ रामसरूप अली रस नागर, तजि फर फन्द होहु अनुकूले ॥३॥

पद ॥८॥

देखो सखि लाल बनो नट कैसो ॥ टेक॥ क्रीट मुकुट सिर कमर जांघिया पग नूपुर छम छैसो। ताथेइ बोल डोर पर निरतत जनु गंधर्ब कुवँर गति लैसो ॥१॥ मंद२ मुसकाय बांस पर, सांचत कला हँसै सो। भुजा घुमाय बरषि रस मँजुल काटत गीरा कबूतर जैसो ॥२॥ रामसरूप अली चक्कर दै चित हरि लीन्ह, चितैसो। शोभा छाय रही असनभ में, उड़ुगन सहित भ्रमत घन तैसो ॥३॥

गजल ॥१०॥

श्याम अनमोला रे नयनों को मेरा चोरना ॥टेक॥ पीत पट कांछी काँछे क्रीट सिर मोती गांछे, कुंडल कपोलारे, मयनों को चेहरा मोरना ॥१॥ भृकुटी कमान ताने, नयनायुग गांसीथाने, मोती मुख डोलारे, बैनों को मेत्रा तोड़ना ॥२॥ रामसरूप जन, छबि अरुझान मन, परिसुख चोलारे, चैनों को डेरा भोगन ॥३॥

रसिया होरी का ॥११॥

काहे जात तजे मिथिला को लालन अब होरी नक-चान॥टेक॥ तुम्हरो रूप अनूप लाड़िले, मेरो जियअर-

झान । तीनों भाइन ते चोखे तुम रस नागर परधान ॥१॥ मोतिन कूर कुम कुमा केशर साजे गेन्द खजान । आशा बड़ी तुम्हारे संग मिलि खेलौं रँग मैदान ॥ ॥२॥ बर बस घेर नचाइ छबीले, करती सुन्दर गान । परमा प्रेम माँहि मन डूबत, सुन२ नूपुर तान ॥३॥ रामसरूप अली होला करि जायो होत विहान । अस कहि चूमि कपोलन सरहज लगि उर कर सनमान॥४॥

दादरा ॥१२॥

धनु धारी हमारी गली आजाव जो हम पर प्यार हो ।।टेक।। शैर— श्यामरूप सुघर नयन ,बरषत रस मधुर बयन, हाँसी की गाँसी कढ़ा जाव जो हम पर प्यार हो ॥१॥ ग्रींवा चित चोर२, अँगुरी मृदु मोर२, बीणा की तान सुना जाव जो हम पर प्यार हो ॥२॥ रामसरूप आस रंग, जियरा पपीर अंग, नेहा को मेहा बरषा जाव जो हम पर प्यार हो ॥३॥

तथा ॥१३॥

ऐसे सइयां हमार न मानतरी ।।टेक।। रेखता ॥ हरते है चित्त चितवनि मुसक्काय इधर में, गहि खैंच लेत बहियां लिपटाइ जिगर में, डर मान २ मन में बरजौं जो बार२, मानै न एक मेरी मैं जाउं हार२, नित हँसि२ घूघट तान तरी ॥१॥ कर जाउं मान जबही झकझोर सुघर को, बैठों लगाइ अंचल मुख

मोर उधर को, कर जोर२ विनती करते हैं गाइ२, होते हैं अधिक रस बस बेशर झुलाइ२, मुख लखि२, उधम ठानतरी ॥२॥ कह रामरूप आली सुन मोर बचन को, सब खोल सफा कह दे चित चोर बलम को, दरबार लली जू के जब होयगी सजा, पावेंगें खूब उर भर सब रोज की मजा, मोरी बारी उमर सब जानतरी ॥३॥

तथा ॥१४॥

मन लैं गयो लाल लगाय छतिआ। श्याम सरूप सुहावनि मूरति, चित गइ चोभि हंसन दतिआ ॥१॥ जबते ब्याहि सिया को लैं गये तबते, हाय लिखी न पतिया ॥२॥ रामसरूप देह प्यारे बिन, कमला तीर करौं सतिआ ॥३॥

दादरा ॥१५॥

हाय दरद नित बढ़त सवाई ॥ टेक ॥ दरद के मारे भई परद बिन, देखि नारि नर करत चवाई ॥१॥ श्यामल अंग क्रीट वाले पर, काह कहौं चित फंसि गयो माई ॥२॥ रामसरूप अली मरि जैहों जो न मिलैं सियबर सुखदाई ॥३॥

पद ॥१६॥

कोहत सैंया तेरो मुख चन्द्र समान ॥टेक॥ जा शशि को सब दोषी बतावत, तापट बदन बखान॥१॥

अब नहिं पैर धरौं प्यारे दिशि, मेरो करत अपमान ॥ २॥ रामसरूप लाडिली असकहि बैठ रही करिमान ॥३॥

दादरा ॥१७॥

झूलन हित प्यारी आवत नइयाँ ॥टेक॥ कर गइं मान आज महलन में. का कछु चूक तुम्हारी ॥ १ ॥ तुम्हरो ओर उपाय अनेकन, हम बिनती करि हारी॥ ॥२॥ रामसरूप अली लालन तुम, भरि लावो अंकवारी ॥३॥

लय ॥१८॥

प्यारो प्यारी मनावन आयो ॥टेक॥ माथ नवाय दीन्ह गल बहियां, हँसि कर कमल चिबुक पर लायो ॥१॥ भाषत लाल प्रिया तेरे बिन, झूलन नेक हमे नहीं भायो ॥२॥ सुनि लिपठाय हंसी प्रीतम संग, रामसरूप अली पद गायो ॥३॥

दो० रामरूप कुसुमावली, सुनहिं करहिं जे गान ।
तेहि अखियां मखियां रहैं, प्रभु छबि मधु लिपटान ॥

ग्रंथ करता का परिचय ।

अवधपुरी में छावनी, मनीराम शुभ नाम ।
गादि धीश चौथे गुरु, जेहि नित करौं प्रनाम॥
चित्रकूट में आय के, कुण्ड जानकी पास ।
रामसरूप कुटीर रचि, कीन्हो अचल निवास ॥

इति श्री स्वामिरामसरूप परमहंस कृत
पद कुसुम सम्पूर्णम् ॥

सूचना।

जिन महानुभावों को पुस्तक मंगाना हों वे निम्नलिखित पते से)॥ आने का टिकट भेज कर मंगा सकते हैं।

पुस्तक मिलने का पताः—

श्री परमहंस रामस्वरूपजी महाराज,
मु० श्रीजानकी कुण्ड,
पो० चित्रकूट,
जिला बांदा।